भारत में सूफी दर्शन

शोध प्रपत्र लेखक
प्रा.डॉ.प्रदीप माणिकराव शिंदे
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय
पाचवड,ता,वाई,जिला.सातारा.
महाराष्ट्र.

भारतीय सूफी दर्शन ने सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बाँधकर सारे धर्म और सम्प्रदायों का समन्वय किया था। उन लोगों की पूजा पद्धति अलग होते हुए भी एकता स्थापित करने का महान क्रन्तिकारी कार्य सुफियोने किया हैं। 'सूफियों ने हिन्दू संस्कृति के उन प्रभावों को स्वीकार किया हैं, जो हजरत मोहम्मद साहिब के हदीसों के विरुद्ध नहीं थे। इस्लाम धर्म की स्थापना मुहम्मद पैगम्बर ने की थी । इस्लाम के अंतर्गत कई मत और विचारधारा देखने को मिलती है । परन्तु यह सारे आन्दोलन कुरान को केंद्र में रख कर हो रहे थे। भारत में शिया और सुन्नी का प्रचलन था। ईरान, इराक, पाकिस्तान इन देशों में एक ही विचारधारा के अनुयायी मिलते हैं। कुरआन और हदीस की आधार पर सुन्नी संप्रदाय की चार प्रमुख विचारधाराएँ मिलती हैं। इस विचारधारा को पूर्वी तुर्कों ने अपनाया और वे भारत में ले आए। सुन्नी विचारधारा को सबसे बडा विरोध तुर्कप्रधान दर्शन ने किया ज्यों एकेश्वरवादी थे । इस मत के अनुसार ईश्वर न्यायकारी है और मनुष्यों के दुष्कर्मों से उसका कोई लेना देना नहीं है। मनुष्य की मन शक्ति है इसलिए वह ज्यों भी कर्म करता हैं उसके लिए वह स्वयं ही जिम्मेदार हैं। अबुल हसन अशरी ने अपनी विचारधारा के साथ पुरातन पंथी सिद्धान्त के विचारों को स्वीकार कर के अपने अलग दर्शन (कलाम) को निर्माण किया। अशरी दर्शन के अनुसार ईश्वर को सब कुछ ज्ञात है, देखता है और बोलता हैं। कुरआन चिरंतन सत्य है। इस विचारधारा के मूर्धन्य चिन्तक अबू हमीद अल गजाली ने रहस्यवाद और इस्लामी परम्परावाद का समन्वय किया था। उन्होंने सूफी जीवन मार्ग को अपनाया और जीवनभर उस तत्त्व प्रणाली के साथ जुड़े रहे। अशरी ने परम्परावादी और सूफी उदारमतवादी दोनों में आदर का स्थान प्राप्त किया था। अल गजली ने सुन्नी जैसे उदारमतवादीयों पर हमला किया था। उनका विचार था कि तर्क से ज्ञान प्राप्त नहीं होता हैं। सकारात्मक ज्ञान आत्मानुभूति से प्राप्त किया जा सकता हैं। सूफीयों की उलेमाओं की तरह ही कुरआन में आस्था थी। इनके द्वारा स्थापित मदरसों में अशरी की विचारधारा का परिचय किया जाता था। समाज में विद्वानों को उलेमा नाम से संबोधित किया जाता था। उलेमाओं का मध्य भारत की राजनीति में प्रभाव देखने को मिलता हैं।

सूफी का अर्थ और परिभाषा

सूफी मत को समझना है तो पहले सूफी शब्द की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक होता हैं। पंजाबी विश्वकोष के अंतर्गत इसकी व्युत्पत्ति 'सफा' शब्द से मानी जाती हैं। यह शब्द यूनानी शब्द 'थिउसुफिया' से मानते हैं। जिसका मूल अर्थ ब्रम्ह या अध्यात्मिक विचारधारा से हैं।' पंजाबी विश्वकोष में सूफी मुसलमानों का एक फिरका हैं जो काले कपडे में रहता हैं। हिंदी शब्द सागर में सूफी मुसलमानों का एक संप्रदाय माना हैं। सफा का अर्थ है कि जो लोग अपनी आत्मा की पवित्रता पर ज्यादा ध्यन देते हैं वे सूफी कहलाते हैं। जो लोग मस्जिद –ए- नबवी में हर समय इबादत में लीन रहते थे उन्हें सूफी मत के कहा करते थे। जो लोग नमाज के वक्त अग्रिम पंक्ति में रहते थे उन्हें सूफी नाम से सम्बोधित किया जाता था। जो लोग सुफ़ या ऊन के कपडे पहनते हैं, वो सूफी हैं। अबुल कासिम अलकशयरी ने कहा है कि सूफी अरबी भाषा की 'सफ़व' धातु से निकला हैं जिसका अर्थ संशोधन करना, साफ़ करना, पवित्र बनाना इत्यादि हैं। मतलब जो अपने आप का शोध करता हैं खुदी को पवित्र बनाता हैं वह सूफी हैं।

सूफी तत्व

उलेमा से अलग विचार सूफीयों के थे। सूफी रहस्यवाद के समर्थक थे । वे पवित्र धर्मपरायण मुलायम विचार के पुरुष थे, वे राजनैतिक और धर्मिक जीवन के ह्रास पर दु:खी थे। सुफियो ने सामाजिक रूप से धर्म का प्रदर्शन करना, उलेमा द्वारा भ्रष्ट शासकों की सेवा करने का विरोध किया था। 'संतों को कहा सिकरी सो काम' इस विचारों के अनुसार कई अनुयायी अकेले तपस्वी के जैसा जीवनयापन करने लगे थे और उनका राज्य से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। सूफियों द्वारा स्वतंत्र विचारों पर बल दिया गया था। उन्होंने परम्परा से चले आ रहे धर्म के पूजा-पाठ एवं कट्टरता का विरोध किया था। सूफियों ने धर्म में ध्यान को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। वे भक्ति को भारतीय संत परम्परा के जैसे ही धर्म में

मानव की सेवा को ईश्वर प्रेम के रूप में देखते थे। सूफीयों ने पंथ को विभिन्न श्रेणियों (सिलसिलों) में विभाजित किया था। प्रत्येक श्रेणियों में अपना स्वतंत्र पीर (मार्गदर्शक) ख्वाजा या शेख रहता था। पीर और उनके शागिर्द खानका (सेवागढ़) में रहते थे। पीर अपने शिष्य को जिम्मेदारी सौंप देते थे जिसे वली अहद कहा जाता हैं। रहस्यमय भावाभिव्यक्ति के लिए समां पवित्र गीतों का गायन संगठित किया जाता था। इराक का बसरा स्थान सूफी कार्य का केन्द्र बन गया था। सूफी संत नए धर्म की बात नहीं कर रहे थे, इस्लाम के ही अंतर्गत उदारमत की शुरुआत कर रहे थे। उलेमा जैसी ही कुरआन में उनकी आस्था थी।

भारत में सूफीमत

भारत में सूफी दर्शन का प्रचार-प्रसार 11वीं तथा 12वीं शताब्दी में हो रह था। अल हुजवारी एक श्रेष्ठ संत थे, भारत में उनकी मृत्यु 1089 ई. में हुई थी। उन्हें दाता गंजबख्श (असीमित खजाने के वितरक) के रूप में जाना जाता है। मुल्तान और पंजाब इनके मुख्य केंद्र थे। 14वीं सदी तक सूफी कश्मीर, बिहार, बंगाल एवं दक्षिण तक जा पहुँचे थे। यह महत्वपूर्ण हैं कि भारत में आते-आते सूफीवाद की विचारधारा ने परिपक्व रूप धारण कर लिया था। सूफियों के मौलिक एवं नैतिक सिद्धांत, शिक्षण एवं आदेश प्रणाली, उपवास, प्रार्थना एवं खानकाह में रहने की परम्परा निश्चित हो गई थी। सूफी अफगानिस्तान के रास्ते भारत में आए थे। उनकी शुद्ध जीवन पद्धति, भक्ति का प्रेममार्ग, मानवता और सेवाभाव की वृत्ति के कारण वे जनमानसप्रिय बन गए और सम्पूर्ण भारत में सूफियों को सम्मान प्राप्त हुआ था। 'आइने-ए-अकबरी' में अबुल फज़ल ने सूफियों के चौदह श्रेणियों (सिलसिलों) को निर्देशित किया है। सिलसिलों के दो प्रकार थे एक बेशरा और दूसरा बाशरा। बाशरा में वे सिलसिले थे जो शरा (इस्लामी कानून) विश्वास करते थे और पारम्परिक नमाज, रोजा का अपने जीवन में पालन किया करते थे। प्रमुख सिलसिले चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी औरनख्शबंदी थे। बेशरा सिलसिलों में शरा का नियमों का नहीं होता था। इनमे प्रमुख कलन्दर, फिरदौसी इत्यादि सिलसिले थे।

चिश्ती सिलसिला

ख्वाजा चिश्ती सिलसिले की स्थापना हेरात नामक गाँव में हुई थी। इसके प्रवर्तक ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती जन्म 1142 ई.में हुआ था, इन्होने 1192 ई. में अपने मत का प्रचार किया। ख्वाजा चिश्ती की भारत में स्थापना की थी। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर को शिक्षा के मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित किया था। उन्होंने ईश्वर की भक्ति मनुष्य की सेवा को माना था। उन्होंने दीन- दलितों के बीच जाकर सेवा कार्य किया था। चिश्ती की मृत्यु अजमेर के सिलसिले में 1236 ई.में हुई थी। अजमेर एक प्रमुख तीर्थस्थान बन गया था। मुगल सम्राट शेखों की पवित्र दरगाहों की यात्रा करते थे। आज भी ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह लाखों मुसलमान और हिन्दू दौरा किया करते हैं। शेख फरीदउद्दीन चिश्ती ने सिलसिलों का हरियाणा और पंजाब में सभी के लिए प्यार एवं उदारता का दरवाजा खोला। उन्हें बाबा फरीद नाम से जाना जाता था। उनका हिन्दुओं और मुसलमानों में सम्मान बढ़ गया था। बाबा फरीद के शिष्य शेख निजामुद्दीन औलिया ने दिल्ली को चिश्ती सिलसिले का मुख्य केन्द्र बनाने की जिम्मेदारी सम्भाली थी । उन्होंने 1259 ई. से दिल्ली में साठ वर्षों के दौरान सात सुलतानों को देखा। उन्होंने राज्य के शासको और रईसों से दूर रहकर गरीबों की सेवा की थी। उनके अनुयायियों में से एक अमीर खुसरों और चिश्ती संत शेख नसीरूद्दीन महमूद थे। बाबा फरीद की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारियों के अभाव में चिश्ती सिलसिले के अनुयायी पूर्वी दक्षिण भारत चले गए।

सुहरवर्दी सिलसिला

सुहरवर्दी सिलसिला शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी ने स्थापित किया था। उसे भारत में शेख बहाउद्दीन जकारिया द्वारा स्थापित किया था। उसने खानख्वाह की ऐसी व्यवस्था की जिसके शासक उच्च सरकारी अधिकारी एवं अमीर व्यापारी थे। चिश्ती संतों के विपरीत सुहरावर्दियों ने शासकों के साथ सम्बन्ध स्थापित किए थे। सुहरावर्दियों ने बक्षिस में प्राप्त जागीरें और चर्च विभाग में सरकारी नौकरियाँ स्वीकार कीं थी। सुहरावर्दी सिलसिला पंजाब और सिंध प्रान्त में लोकप्रिय था।

कादरी सिलसिला

कादरी सिलसिला अब्दुल कादिर जिलानी ने स्थापित किया हैं जिलानी का जन्म 1078 ई.में फारस में हुआ था। पंजाबी में अद्वैतवाद का प्रचार कादरी सिलसिले ने किया था। उनकी करामत देख लोग दीदार करते थे। सत्रह वर्हा की अवस्था में बगदाद चले गए थे। उन्हें उनके चाहने वालों ने अनेक उपाधियों से अलंकृत किया था ।

सूफी दर्शन के सिद्धांत

1. एकेश्वरवाद – सूफी विचारधारा के अनुसार ईश्वर एक है, सूफी अद्वैतवाद मानने वाले थे उनका विचार था कि अल्लाह और बन्दे में अन्तर नहीं होता हैं ।
2. भौतिक सुख साधनों का त्याग – भौतिक सुख साधनों का त्याग कर ईश्वर के प्रति समर्पित होने के लिए कहते थे ।
3. प्रेम और अहिंसा में विश्वास – सूफी जीवन में प्रेम और अहिसां को महत्वपूर्ण स्थान देते थे थे । ईश्वर के दर्शन का मार्ग प्रेम ही हैं ।
4. सहृदयता – सूफी धर्म के लोग उदारशील होते थे। उनका सभी धर्मों के प्रति दृष्टिकोण समान था । सूफी दर्शन समन्वयवादी था।
5. शान्ति – उनके अनुसार शान्ति से ही ईश्वर प्राप्त हो सकते हैं। मन में शांति हो तो ही इश्वर में ध्यान लगा सकते हैं
6. इस्लाम का प्रचार – इस्लाम का प्रचार प्रचार उपदेश से हो सकता है ऐसा उनका मत था उपदेश से मन परिवर्तन होकर मनुष्य सन्मार्ग पर चलता हैं ।
7. प्रेममार्ग – सूफी संत प्रेमी को लौकिक व प्रेमिका को अलौकिक रूप में देख कर आत्मा और परमात्मा की चर्चा की हैं ।
8. शैतान – सूफी दर्शन में ईश्वर की प्राप्ती में शैतान को बाधक माना हैं ।
9. हृदय की पवित्रता – सूफी मत के अनुसार मन की पवित्रता दान, तीर्थयात्रा, उपवास से संभव हैं।
10. गुरू का महत्व – सूफी दर्शन में गुरु के साथ साथ शिष्य को महत्व दिया हैं।
11. आडम्बर का विरोध – सूफी संत ने अंधश्रद्धा तथा बाह्य आडम्बर का विरोध कर के मनुष्य को सात्विक जीवन का मार्ग दिखाया हैं।
12. सिलसिलो का महत्व – सूफी दर्शन में सिलसिलो का महत्व प्रतिपादित किया हैं। वे इससे सबंध बनाए रखते थे।

सूफी सम्प्रदाय के प्रमुख संत –

1. **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती** – भारत में चिश्ती सम्प्रदाय लोकप्रिय हुआ हैं । इसके प्रवर्तक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती थे । इनका जन्म ईरान के सिस्तान प्रदेश में हुआ था । बचपन में ही सन्यास लिया था। ख्वाजा उस्मान हसन उनके गुरु थे और वे अपने गुरू के निर्देश में 1190 में भारत आए थे । एकेश्वरवाद का ज्ञान देते हुए मानव सेवा को महत्व देकर ईश्वर की भक्ति का उपदेश किया था । हिन्दु के प्रति उनका दृष्टिकोण उदारमतवादी था ।
2. **शेख निजामुदुदीन औलियां** –

   निजामुदुदीन औलियां 1236 ई. में पैदा हुए थे । बीस वर्ष की आयु में शेख फरीद के शिष्य बन गये थे । उन्होंने चिश्ती सम्प्रदाय के दर्शन का उपदेश देकर अपने मत का प्रचार किया था। उन्होंने लोगों को ईश्वर में आस्था और प्रेम का सन्देश दिया। जो भी उनके सम्पर्क में थे उनसे माया से मुक्ति कीबात करते थे ।
3. **अमीर खुसरो** –

   हिंदी के मूर्धन्य कवि अमीर खुसरों 1253 ई. में एटा जिले के पटियाली नामक गाँव में पैदा हुए थे। वे एक महान सूफी संत थे। खुसरो बचपन से ही कविता कहने लगे थे। वे संगीत के ज्ञानी थे। संगीत के जरिए हिन्दू और मुसलमानों मे समन्वय स्थापित किया था।

4. **शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर**

बाबा फरीद के नाम से लोकप्रिय थे। सिख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक बाबा फरीद के विचारधारा से प्रभावित हुए थे। बाबा फरीद के वचनों को सिख पवित्र ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहिब में स्थान प्राप्त हुआ।

सूफी दर्शन का प्रभाव –

सूफी दर्शन में आत्मा और परमात्मा के एक होने के तत्व को सीकारते हैं प्रेम में स्वंय को प्रेमी बनाकर ईश्वर प्राप्ति में विश्वास करता हैं। इसमें प्रेम डो प्रकार का बताया हैं लौकिक प्रेम (इश्क मजाजी) अलौकिक प्रेम (इश्क हकीकी)। लौकिक प्रेम में प्रमी भौतिक सुख साधनों से प्रेम रखता हैं,दुनिया के आकर्षण में मशगुल हो जाता हैं । अलौकिक प्रेम में उसे सिर्फ ईश्वर के ही दर्शन होते हैं। वह परमात्मा से ही प्रेम करता हैं। सूफी मत का भारत में बहुत प्रभाव था। हिन्दू और मुस्लिम में सांस्कृतिक ,संगीत ,खानपान ऐसे अनेक क्षेत्र एक दुसरे को प्रभावित कर रहे थे हिन्दू। भारत में हिन्दू मुस्लिम संस्कृति में समन्वय स्थापित हो गया था। शासक वर्ग को मानव हित में कार्य करने प्रेरणा दी गयी थी । संतों की भूमिका हिन्दू मुस्लिम समाज में अध्यात्मिक और नैतिक रूप से एकता स्थापित करने में अहम थी । शांति प्रेम अहिंसा उदारता सूफी दर्शन के साथ भक्तिधारा की नीव थी । दोनों रहस्यवाद में मानवी संघर्ष से ऊपर उठकर नैतिक मूल्यों को स्थापित कर मानवी कल्याण की बात करते हैं।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि सूफी दर्शन इस्लाम का वह पक्ष हैं जहाँ परमात्मा का ज्ञान हैं, जिसमें भक्ति साधना, ध्यान का समस्त ज्ञान हैं। सूफी दर्शन वह रहस्यवादी विचारधारा हैं जिसमे भक्त या साधक अपने मन को वश में लता हैं। इसका मुख्य प्रयोजन यह हैं कि अंतरात्मा को समझना और परमात्मा के निकट पहुंचना और तादात्म्य स्थापित कर चिरंतन परमानन्द की अवस्था में जाना हैं। सूफी मत में गुरु को अनन्यसाधारण महत्व हैं।सूफी मार्ग पर चलना हैं तो गुरु से दीक्षा प्राप्त करना जरुरी हैं। सूफी दर्शन एक अध्यात्म साधना हैं जो अंत में खुद को फ़ना करते हैं और अमरत्व प्राप्त करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ -

1.पंजाबी विश्वकोष,भाषाविभाग पंजाब
2.हिदी शब्द सागर,श्यामसुन्दर दास
3.पंजाबी सूफी साहित्य संदर्भ ग्रन्थ,गुरुदेव सिंह
4.पंजाबी सूफी काव्य दा इतिहास,गुरुदेव सिंह
5.सूफीमत साधना और साहित्य, तिवारी राम पूजन